

कांतिलाल

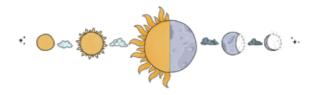
यह दिन भी चला जाएगा

by



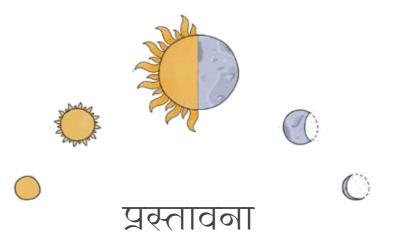
पहला संस्करण 26-10-2024

मूलपाठ - प्रेरणा तोषनीवाल काग़ज़ के फूल की ओर से। डिज़ाइन और चित्रण - रूपल गुप्ता काग़ज़ के फूल की ओर से। हिन्दी में अनुवाद - आशीष मिश्रा काग़ज़ के फूल की ओर से। टेक्स्ट एवं तस्वीरें निजी और गोपनीय है। Through storms and calm, he stood so tall, With hope in his heart, he conquered it all.



आंधियों में भी वह अडिग खड़ा रहा, आशा के दीप से हर कठिनाई को जीत लिया।





मुंबई शहर के हृदय में,जहां दैनिक जीवन की लय शहर की समृद्ध विरासत के साथ कदम से कदम मिलाकर निरंतर चलती रहती है, उसी जीवंत शहर में एक ऐसा व्यक्ति पला-बढ़ा जिसकी मुस्कुराहट और जीवन के प्रति सकारात्मक नज़रिये ने उसके जीवन में आने वाले सबसे अंधकारमय दिनों को भी रोशन किया है उस व्यक्तित्व का नाम है- कांतिलाल राठौड़। अपनी ऊर्जा से सराबोर कर देने वाली सकरात्मक मुस्कान और

असीम ऊर्जा के लिए जाने-जाने वाले कांतिलाल की जीवन-यात्रा उतार-चढाव,

आनंद, अनुभवों और अडिंग आशावाद का जीता-जागता उदाहरण है।

कांतिलाल की जीवन के सामान्य क्षणों में उत्साहपूर्वक जीने की कला और दृढ़ संकल्प के साथ चुनौतियों का सामना करने की क्षमता ने उनके आसपास के लोगों के जीवन को बहुत प्रभावित किया है। पारिवारिक व्यवसाय चलाने की पेचीदिगियों का सहजता से समाधान खोजने से लेकर व्यक्तिगत नुकसान से बचने तक की, उनकी यात्रा उनके सहज और आशावादी दृष्टिकोण का बेमिसाल उदाहरण है। फोटोग्राफी से उनका इतना लगाव था मानो खुशी के हर पल को कैद कर लेना चाहते थे, और नये लोगों से मिलना और उनके साथ घुलमिल जाना और उन नये दोस्तों के लिए एक सहज परिवेश बनाने का उनका रवैया, शायद उनके सबसे महत्वपूर्ण गुणों में से एक है। उनका मूलमंत्र,

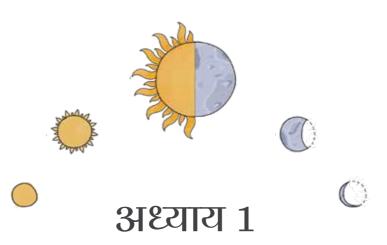


"ये दिन भी चला जाएगा" जीवन के उतार-चढ़ाव में उनके विश्वास को दर्शाता है। उनके दर्शन में एक गहरा ज्ञान निहित है, जैसे- उन विषयों पर ध्यान केंद्रित करना जिसे मनुष्य नियंत्रित कर सकता है और बाकी विषयों को भाग्य पर छोड़ देना शामिल है। कांतिलाल के स्वभाव की सहजता, उनके परिवार के लिए हमेशा प्रेरणाश्रोत रही है, जो इस प्रकार है- "वर्तमान के खूबसूरत क्षणों का आनन्द लेना और जीवन की अप्रत्याशित घटनाओं में सांत्वना की तलाश करना।"

जैसे ही हम "कांतिलाल – यह दिन भी चला जाएगा" के पृष्ठों के माध्यम से इस अनुभव-यात्रा की शुरुआत करेंगे, तब उसमें हम न केवल संघर्षों बल्कि सफलताओं को भी देखेंगे और इससे हम न केवल पराजय बल्कि बहुत कुछ सीखने की भी कोशिश करेंगे। कांतिलाल की कहानी एक अनुस्मारक है कि रात चाहे कितनी भी अंधेरी क्यों न हो, हमेशा आशा की एक सुबह अवश्य होती है जो उस रात के काले घने अंधेरे के खत्म होने की प्रतीक्षा करती रहती है। यह जीवनी, पूरी तरह से जीने वाले जीवन का उत्सव है, सकारात्मकता की शक्ति के लिए एक मिसाल है, और यह, इसे पढ़ने वाले सभी लोगों के लिए एक प्रेरणास्त्रोत है।







मूल और विरासत शुरुआती पृष्ठभूमि

राजस्थान के पाली जिले के मध्य में स्थित एक साधारण से गाँव जिसे बाली के नाम से जाना जाता है। यही वह जगह है जहाँ धैर्य और नम्यता की एक उल्लेखनीय कहानी तैयार हुई थी। साल 1946 का समय था, जब एक जैन मारवाड़ी घराने में कांतिलाल राठौड़ नाम के एक लड़के का जन्म हुआ था। कांतिलाल, शिवलाल और पानीबाई राठौड के दस बच्चों (पाँच बेटे और पाँच बेटियाँ) में से एक थे।

कांतिलाल के जन्म से कुछ साल पहले ही शिवलाल अपने कई बच्चों को खो चुके थे, जो पर्याप्त चिकित्सा देखभाल के अभाव और अंधविश्वासों से ग्रसित युग के शिकार हुए थे। उन दिनों, बस्तियां बहुत दूर-दूर बसी हुई होती थीं और अंधविश्वास का बोलबाला था किसी भी तरह की चिकित्सकीय जागरुकता का कोई नामोनिशान नहीं था। उस कालखंड में अंधविश्वास इतना प्रबल हो गया था कि शिवलाल और पानीबाई जैसे



माता-पिता भाग्य की दया पर पूर्णतः निर्भर हो गए थे और किसी भी घटना को नियति की परिणति मान कर स्वीकार करते रहे।

अपने युवा बच्चों को खो देने की पीड़ा का माता-पिता के मानसिक स्वास्थ्य पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा, लेकिन इन सब के वावजूद भी वे जीवन को आगे बढ़ाने के क्रम में लगे रहे। अपने कोख के बच्चों को खो देने की तकलीफ बहुत बड़ी थी फिर भी उस समय की परिस्थितियों में इस तरह के ये पहले मामले नहीं थे उस समय के परिवेश में ऐसी घटनाएं आम थी। जीवन के उन कठिनतम क्षणों के बावजूद, शिवलाल ने अपने परिवार की जरुरतों को पूरा करने और आगे बढ़ाने का दृढ़ संकल्प लिया।

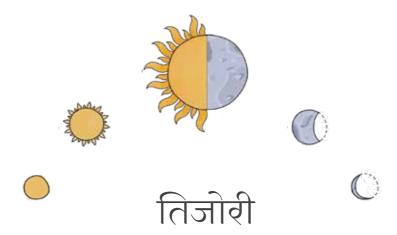
शिवलाल के नजिरए से देखें तो हम उन दिनों की कठोर वास्तविकताओं और प्रतिकूलताओं का सामना करने से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों की झलक पाते हैं। उनकी विरासत केवल चुनौतियों की नहीं है, बल्कि दृढ़ता की भी है- जहाँ वे जीवन के उतार- चढ़ाव के झटके को सहन करते हुए उनके साथ अनुकूलन करके और अंततः उसमें अर्थ खोजने की क्षमता को विकसित करते हुए आगे बढ़ते रहे हैं।

चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में एक सयुंक्त परिवार के बीच पले-बढ़े कांतिलाल में समुदाय और साधनों के प्रति गहरी समझ विकसित हुई। अल्पायु से ही, उन्होंने ग्रामीण जीवन के संघर्षों को बहुत नज़दीक से देखा, जिसने उन्हें कड़ी मेहनत और दृढ़ निश्चय के बारे में अनमोल सबक सिखाया। हालाँकि, उनका जीवन उतार-चढ़ाव और चुनौतियों से भरा हुआ था। कांतिलाल को अपने जीवन के संघर्ष के दिनों में जबरदस्त चुनौतियों और असफलताओं का सामना करना पड़ा, जिनमें से प्रत्येक ने उनके चिरत्र और धैर्य को आकार दिया।

कठिनाइयों और संघर्षों का सामना करते हुए, उन्होंने अपने स्वभाव में विनम्रता और दृढ़संकल्पों को बनाये रखा जो कि उन्हें आने वाले वर्षों में अपने परिवार के कुलपिता के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अपने सभी भाइयों में कांतिलाल एकमात्र जीवित व्यक्ति हैं। जो कि उनकी जीवन यात्रा को परिभाषित करने वाले धैर्य और शक्ति को प्रमाणित करता है। यह जीवनी, "कांतिलाल - यह दिन भी चला जाएगा" केवल तिथियों और घटनाओं के वर्णन से कहीं अधिक है; जो कि कांतिलाल के उत्साह, जोश और उनके संघर्षों की भावना का एक







जितेन्द्र, नीता ^{बेटा, बहु}

देस जीवन की शिक्षाओं की अनमोल निधि का संकलन जितेन्द्र और नीता द्वारा किया गया है जिसमें उनके पिता से सीखी गई जीवन की शिक्षाओं का वर्णन किया गया है।

"जितनी चादर हो, उतना ही पैर पसारना।"

"दुसरे के देखा-देखी नहीं करना।"

"आधी रोटी खाना, पर किसी का बाकी मत रखना।"

"यदि १ रुपया कमाना तो २५ पैसे बचाना।"

"परिवार में सबको साथ लेकर चलना और उन्हें खुश रखना।"

"भले ही आपके पास एक लाख रुपए हों, लेकिन आपके लिए इसका कोई मूल्य नहीं है। क्योंकि यह आपका नहीं है।"

"किसी के सुख में भले मत जाओ, लेकिन किसी के दुःख में बुलावे का इंतजार मत करना।"



राकेश ^{बेटा}

चपन से मैंने अपने पापा के संघर्षों को नजदीक से देखा है। जब मैं उनके साथ दुकान में अधिकतर समय बिताता था तब मुझे ऐसा लगता था कि यह मेरा भी संघर्ष है। जीवन में तमाम कठिनाइयों के बावजूद हमने कभी भोजन के लिए संघर्ष नहीं किया। एक बच्चे के रूप में मुझे जो चाहिए था, वह हमेशा मिला, लेकिन मैंने कभी ज्यादा मांगने की इच्छा नहीं की। धीरे-धीरे मैं समय के साथ परिपक्व और समझदार हो गया, और उनके सिद्धांतों और मूल्यों को अपनाया, जो आज मेरी सबसे बड़ी संपत्ति हैं। मुझे याद है कि मैंने नेपाल की अपनी पिकनिक की योजना उनसे साझा नहीं की, क्योंकि मुझे लगा कि यह बहुत महंगा होगा और उन पर इसका बोझ ज्यादा हो सकता है। विरासत के रूप में मैंने उनसे जिन सिद्धान्तों और मूल्यों को सीखा था मुझे उस पर बहुत गर्व है जो मैं अपने बच्चों के लिए छोड़ रहा हूं। थैंक यू पापा।

मैं अपने माता-पिता के साथ रहने के लिए खुद को गौरवान्वित महसूस करता हूं और इसके लिए अपनी पत्नी जीता का आभारी हं, जिन्होंने हमारे रिश्ते को हमेशा मजबूत बनाए रखा।

मुझे वह दिन याद है जब मैं सीए बना था। पापा की खुशी देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वे दुनिया के शीर्ष पर पहुंच गए हों। उसी दिन हम पवित्र स्थान पालिताना के लिए अनारक्षित टिकट लेकर रवाना हुए, और वहाँ पहुंचने के लिए हम इतने उत्सुक थे कि ठंड में एक खुली वैन में बैठ गए।

पापा ने हमेशा अपने व्यवसाय और परिवार को बेहतरीन तरीके से प्रबंधित किया है। उन्होंने तीन पीढ़ियों के विचारों को एक ही छत के नीचे सफलतापूर्वक संभाला है। जिस तरह से उन्होंने अपने वैवाहिक जीवन और बच्चों की परविरश की है, मैं उनकी तरह ही एक सफल पित और पिता बनने की पूरी कोशिश करता हूं। उनका परिवार के प्रित समर्पण और सकारात्मक दृष्टिकोण प्रेरणादायक हैं। वे कहते हैं कि मैं देनदारियों की विरासत नहीं छोड़ना चाहता और ऐसा कुछ नहीं करना चाहता जो आपके कद को प्रभावित करता हो। वे ऐसे व्यक्ति हैं जिनसे किसी भी उम्र का व्यक्ति सहजता से बातचीत कर सकता है, और उनकी मुस्कान और सकारात्मकता उनकी पहचान है।





60 के दशक में मेरे पिता और मैं

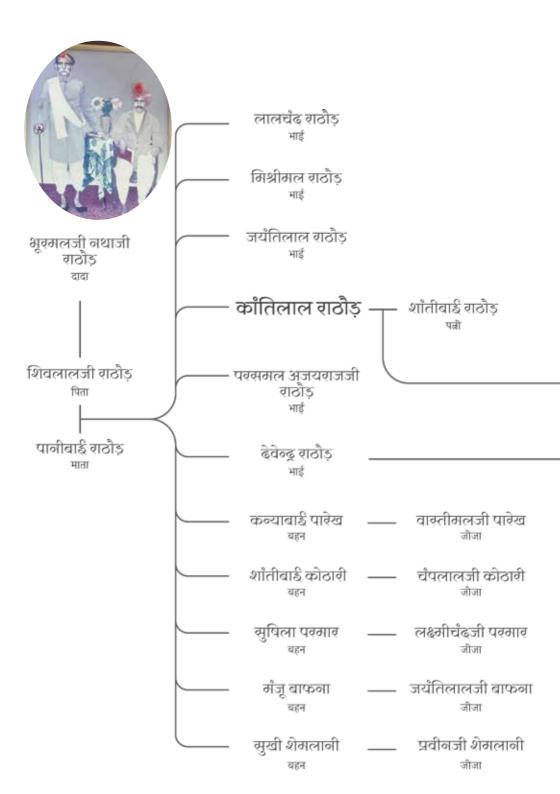


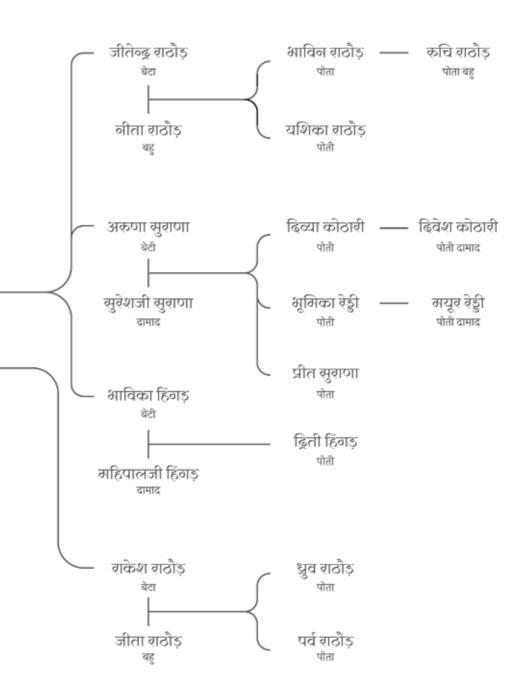
रॉकस्टार





मेरी चाय की साथी









'काग़ज़ के फूल' के निमत और प्रेरणा के साथ



PRESERVING THE STORY OF YOUR FAMILY FOR FUTURE GENERATIONS



Scan to go to our website.



कागज़ पर सजी विरासत

"पापा हमेशा से अपनी जीवन कहानी को संजोना चाहते थे। उनकी जीवनी लिखने की इस प्रक्रिया ने ना सिर्फ उनके संघर्षों और सफलताओं को जीवंत किया है, बल्कि उन मूल्यों को भी दर्शाया है जिन्होंने हमारे परिवार को आकार दिया। इस किताब को अपने हाथों में पकड़ना मेरे लिए बहुत गर्व और ख़ुशी देता है। कागज़ के फूल के निमत और प्रेरणा के साथ काम करते हुए, हमने परिवार की कहानियाँ साझा कीं, जिससे हमारे आपसी रिश्ते और भी मजबूत हुए। सबसे अनमोल उपहार कोई खरीदा हुआ सामान नहीं, बल्कि किसी प्रियजन की कहानी है, जिसे हमेशा के लिए संजो कर रखा जा सकता है। आज ही इस यात्रा की शुरुआत करें और अपने परिवार को एक ऐसी धरोहर दें जिसे वे पीढ़ियों तक सहेज कर रखेंगे।"

- राकेश राठौड़

